



अनादरिादरिगोवन्दिः सर्वकारणकारणम्

एतत्ते चांशकलाः पुंसः कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्"  
(श्रीमद्भागवत १/३/२८)

ईश्वरः परमः कृष्णः सच्चिदानन्दवर्गिः ।  
अनादरिादरिगोवन्दिः सर्वकारणकारणम् ॥ (ब्रह्मसंहिता ५/१)

आवारु बला हय.छे

बदैकि शास्त्रे भगवानरे वर्णना करे बला हय.छे-----  
(श्वतोश्वतर उपनिषद् ७/१०८)

“तमीश्वराणां परमं महेश्वरं तं देवतानां परमं च देवतम् ।  
पतिं पतीनां परमं परस्ताद् वदाम देवं भूवनेशमीड्यम्” ॥  
“न तस्य कार्यं करणं च वदितं ने तं समश्चाभ्यक्षिच दृश्यते ।  
परस्य शक्तिर्विधिवै श्रूयते स्वाभाविकी ज्ञानबलक्रिया च” ॥

अथां ---- “भगवान् अन्यान्य समस्त ईश्वरदरेण परम ईश्वर एवं समस्त  
देवतादरेण परम देवता। सकलहे तार नयिन्तगाधीन। समस्त जीवरो परमेश्वर  
भगवानरे द्वाराइ कबेल वशिषे शक्तिप्राप्त हय.थे थकने; तारा कडे भगवान नन।

তিনি সমস্ত দেবতাদের পূজ্য এবং সমস্ত পতদিরে পরম পতি। তাই তিনি এই জড় জগতের সমস্ত অধিপতি ও ন্যূনতর উর্ধ্ববে এবং সকলের পূজ্য। তাঁর থেকে শ্রেষ্ঠ কউে নহে এবং তিনি সর্ব কারণের কারণ”। ( ব্রহ্মসংহিতার ৫/১ বলছে, ঈশ্বরঃ পরমঃ কৃষ্ণঃ সচ্চদানন্দবগ্নিরহঃ। অনাদরিাদরিংগোবন্দিঃ সর্বকারণকারণম্।।) “তাঁর দহে সাধারণ জীবেরে মতো নয়। তাঁর দহে এবং তাঁর আত্মার মধ্যে কোন পার্থক্য নহে। তিনি পূর্ণ, তাঁর ইন্দ্রিয়গুলি অপ্ৰাকৃত। তাঁর প্রতিটি ইন্দ্রিয়ই যেকোন ইন্দ্রিয়েরে কর্মসাধন করতে পারে। তাই তাঁর থেকে মহৎ আর কউে নহে বা তাঁর সমকক্ষও কউে নহে। তাঁর শক্তি অসীম ও বহুমুখী, তাই তাঁর সমস্ত কর্ম স্বাভাবিকভাবেই সাধিত হযে যায়।।

